विषय–सूची

प्रथम परिच्छेद

शृंगार की पृष्ठभूमि में रसमीमांसा (१–२५)

१. वैदिक साहित्य की रस-दृष्टि १
२. आयुर्वेद की रस-परिकल्पना ५
३. रसेश्वरदर्शन की रसाराधना १४
४. कामशास्त्रीय रस १६
५. संगीत और रस १८
६. चित्रकला और मूर्तिकला के माध्यम से रसाभिव्यक्ति २२

द्वितीय परिच्छेद

शृंगार की पृष्ठभूमि में रसमीमांसा (२६–५०)

१. साहित्यशास्त्रीय रस २६
२. दार्शनिक प्रभाव :— (२८–३४)
   (क) कश्मीर का शैवदर्शन २८
   (ख) अद्वैतवेदान्त ३०
   (ग) सांख्यदर्शन ३२
३. रस की परिभाषा ३४
४. भक्तकवियों की रस-दृष्टि ४२

तृतीय परिच्छेद

ंगार : अपरिभाषित सिद्धान्त-पक्ष (५१–६७)

१. पूर्वविवेचन ५१
२. रसानाथर्वणादपि (५५–६३)
   (क) बाह्य साक्ष्य ५५
   (ख) अन्तः साक्ष्य ५७
३. शृंगार उदभूत् साम्नः ६३
४. कैशिकी-वृत्तितो जज्ञे शृंगारः ६५

चतुर्थ परिच्छेद

शृंगारः परिभा षत सिद्धान्त-पक्ष (६८–९०)

१. विवेचन की भावभूमि ६८

२. भरत (६९–८५)

(क) भारतयुगीन कलादृष्टि ७०

(ख) शृंगार की परिभाषा ७३

(ग) धर्मार्थिकाममूलक शृंगार ८०

(घ) कामः एक व्यापक दृष्टि ८३

(ङ) समीक्षा ८४

३. अभिनवगुप्त और शृंगार (८५–९०)

(क) पूर्वविवेचन ८५

(ख) शृंगाररति और लौकिकरति ८५

(ग) वीर्य-विक्षोभ-सिद्धान्त ८६

(घ) प्रत्यभिज्ञा-दर्शन और उसका आनन्दवाद ८७

(ङ) नवजी की एक उदात्तस्थिति : शृंगारावस्था ८९

(च) समीक्षा ९०

पंचम परिच्छेद

१. आचार्य भोज (९१–१०१)

(क) अहंकार शृंगार की तीन कोटियाँ ९१

(ख) अहंकार शृंगार और रतिप्रकर्ष शृंगार ९४

(ग) शृंगारमेव रसनाद् रसमामनामः ९५

(घ) चतुर्वर्गमूलक शृंगार ९६

(ङ) समीक्षा ९७

२. अग्निपुराण की शृंगार-भावना ९८

षष्ठ परिच्छेद

अन्य आचार्य और शृंगार रस (१०२–११९)

(क) मूलदृष्टियों में परिवर्तन १०२

(ख) परिवर्तन के कारण १०४

(ग) निरुक्तियाँ और उनसे प्राप्त निष्कर्ष १०७

(घ) प्रमुख परिभाषाएँ और उनकी समीक्षा (११०–११९)
आनन्दवर्धन १११, रुद्रट ११२, रुद्रभट्ट ११२,
धनंजय ११२, शारदातनय ११३, मम्मट ११५,
वाग्भट ११५, शिंगभूपाल ११५, भानुदत्त ११५,
विश्वनाथ ११६, जगन्नाथ ११७, हरिपाल देव ११८,

सप्तम परिच्छेद

भक्ति के परिवेष में शृंगार (१२०–१३६)

(क) माधुर्य-भावना की पृष्ठभूमि १२०
(ख) मधुर रस १२१
(ग) मधुरा रति और उसकी चरमपरिणति–महाभावदशा १२३
(घ) मधुरोपासना का विषम–पथ १३५

अष्टम परिच्छेद

शृंगार रस–सामग्री (१३७–१६०)

पूर्व विवेचन १३७
(क) विभाव १३९
(ख) अनुभाव १४३
(ग) सात्त्विक १४८
(घ) संचारी १५१
(ङ) रतिस्थायी १५६

नवम परिच्छेद

शृंगार के भेदोपभेद (१६१–१९६)

१. द्विदल शृंगार १६१
२. सम्भोग (१६४–१७२)
(क) पूर्व विवेचन १६४
(ख) परिभाषाएँ, उपभेद और सीमा १६५
३. विप्रलम्भ (१७२–१९६)
पूर्व विवेचन १७२
परिभाषाएँ और सीमा १७२
(क) पूर्वराग १७८
(ख) मान १८२
(ग) प्रवास १८६

(घ) विरह १९०
(ङ) करुण १९२

दशम परिच्छेद

शृंगाराभास (१९७–२०९)
(क) रसाभास और उसके कारण १९७
(ख) शृंगाराभास और उसका क्षेत्र २००
(ग) नायिका की उपनायक, प्रतिनायक तथा बहुनायकविषयक रति २०२
(घ) अनुभयनिष्ठ रति २०३
(ङ) अचेतन–तिर्यगादि–रति २०४
(च) शृंगार के सन्दर्भ में अश्लीलता २०५

एकादश परिच्छेद

रसराज शृंगार (२०९–२१७)
(क) पूर्व विवेचन २०९
(ख) शृंगारभाव की व्यापकता २१३
(ग) शृंगारभाव की उत्कट आस्वाद्यता २१३
(घ) सब रसों का मूलः शृंगार २१३
(ङ) सभी भावों को आत्मसात् करने का सामर्थ्य २१५
(च) विभावादिकों की विशेषता २१६

द्वादश परिच्छेद

उपसंहार (२१८–२२४)

परिशिष्ट

(क) सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
(ख) सहायक ग्रन्थ सूची
(अ) संस्कृत
(ब) हिन्दी
(स) अंग्रेज़ी
(ग) पुस्तकानुक्रमणिका
(घ) नामानुक्रमणिका
(ङ) विषयानुक्रमणिका